ग्रामीण समाज
Rural Society

B.A. III Honours
Paper VI, Sociology
M.A. JOHN

परिभाषा : ग्रामीण समाज का स्वरूप, ढाँचा, संगठन और इसकी सामाजिक व्यवस्था नगरीय समाज से बिलकुल भिन्न होती है। इसके आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक ढाँचे एवं व्यवस्था की अपनी विशेषताएँ हैं। जो इसे दूसरे समाजों से अलग करती हैं। ग्रामीण मुख्य रूप से कृषि पर आधारित समाज को कहा जाता है। सिम्स ने लिखा है कि "कृषि और ग्रामीण प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं।" कृषि का विकास प्राकृतिक वातावरण और बड़े, खुले उपजाऊ मैदानों में हुआ और विशेषतया उस स्थान पर जहाँ जल की पर्याप्त सुविधा थी। प्रकृति से जुड़े होने के कारण ग्रामीण समाज का स्वाभाविक विकास हुआ है। उसी विकास की प्रक्रिया के साथ ग्रामीण समाज की अनूठी विशेषताएँ हैं; जिनका सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। ये चाहे उनके जीविका अर्जन के साधन के रूप में हो या, रीति रिवाज, संस्कार, परम्परा, अन्धविश्वास, रूढ़ियों आदि के रूप में हों। कृषि और ग्रामीण समाज एक समान हैं। अलग से इनका कोई स्वभाव नहीं है, यह एक दूसरे के पूरक हैं।

हेरल्ड एफ० ई० पीके के अनुसार 'ग्रामीण समुदाय परस्पर सम्बन्धित व्यक्तियों का वह समूह है जो एक कुटुम्ब से अधिक विस्तृत है और जो कभी नियमित, कभी अनियमित रूप से निकटवर्ती गृहों में या कभी निकटवर्ती गली में रहते हैं, यह व्यक्ति

2

कृषि योग्य भूमि में सामान्य रूप से खेती करते हैं और समतल भूमि को आपस में बाँट कर बंजर भूमि को परती में प्रयोग करते हैं। और इसकी निकटवर्ती सीमाओं तक अपने समुदाय के अधिकार का दावा करते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समाज मुख्यतः खेती के व्यवसाय पर आधारित रहता है। ग्रामीण समाज के लिये कृषि एक पारीवारिक व्यवसाय है जो प्रकृति पर निर्भर है। इसलिये ग्राम वासियों के जीवन में प्रकृति का महत्व बहुत अधिक है। प्रकृति से जुड़े होने के कारण इनके लगभग सभी आर्थिक सामाजिक विश्वास किसी न किसी रूप में प्रकृति के प्रभाव से जन्म लिये हैं। जो इनके जीवन के त्यौहारों और मेले रहते हैं।

सामान्यतः ग्रामीण समाज एक जैसा दिखाई पड़ता है परन्तु ऐसा नहीं है इनमें भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इनकी भौगोलिक रचनाएँ, जनसंख्या का घनत्व, सांस्कृतिक प्रतिमान परम्पराएँ और रीति रिवाजों का ढाँचा परस्पर एक ग्रामीण समाज का दूसरे से अलग रहता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अलग आधारों पर इन्हें एक दूसरे से अलग करने की कोशिश की है। Sorokin तथा Zimmerman ने संयुक्त स्वामित्व, संयुक्त पट्टेदारी तथा व्यक्तिगत स्वामित्व के गाँव के रूप में विभाजित किया है। उसके अनुसार व्यक्तिगत पट्टेदारी, जमीनदारों के कर्मचारियों तथा सार्वजनिक कर्मचारियों एवं मालिकों द्वारा भी गाँव बसाये जाते हैं। इसी प्रकार और भी दूसरे विद्वानों ने अलग अलग प्रकार के ग्रामों की चर्चा की है।

Scanned with CamScanner

ग्रामीण समाज की विशेषताएँ :- ग्रामीण समाज की विशेषताओं की चर्चा आकार, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आधारों पर की जा सकती है।

(1) आकार :- आकार के दृष्टिकोण से नगर की अपेक्षा गाँव में जनसंख्या का घनत्व बहुत कम होता है। इसका कारण यह है कि कृषि व्यवसाय के लिए अधिक से अधिक भूमि चाहिए। इसलिए कृषक सामान्यतः वहीं रहना चाहता है जहाँ उसके खेत होते हैं। गाँव में औद्योगिकता न होने के कारण कृषक का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से होता है। वहाँ नागरिक सभ्यता और बनावटी भौतिक संस्कृति का प्रभाव नहीं दिखाई देता। प्रदूषण का प्रभाव न के समान होता है ग्रामीण व्यक्ति का जीवन निष्कपट, निश्छल, सरल और व्यावहारिक होता है। गाँव दूर से ही पहचाने जाते हैं। कच्ची मिट्टी के बने छोटे मकान, फूस की झोपड़ियाँ गाँव की पहचान होते हैं। घर और खेतों के बीच की दूरी बहुत कम होती है। गाँव में घरों की संख्या सैकड़ों भी हो सकती है और केवल 10-20 भी हो सकते हैं। ग्रामीण समाज में सामान्यतः बाग, तालाब, छोटे छोटे कुएँ, मन्दिर, मस्जिदें देखने को मिलते हैं। खुले हुए बड़े मकान मैदान चरागाह के रूप में चारों ओर फैले दिखाई पड़ते हैं।

(2) आर्थिक विशेषताएँ: ग्रामीण समाज के आर्थिक ढाँचे का आधार कृषि व्यवसाय है। गाँव में अधिकांश व्यक्ति कृषि व्यवसाय से जुड़े होते हैं। जिनके पास भूमि नहीं है वह दूसरों के खेतों में श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं। कुछ पशुओं को चराने का कार्य करते हैं। कुछ मछलियों

Scanned with CamScanner

मवेशियों को पालते हैं और उनके दूध का व्यापार करते हैं। इसके अतिरिक्त, लोहार, बढ़ई, चमार व्यक्ति जो सीधे व्यापार से नहीं जुड़े होते हैं फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से कृषक समाज से जुड़े होते हैं। लचर, अपंग और जर्जर अर्थ व्यवस्था के कारण गाँव में अधिकांश व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं। निर्धनता, भुखमरी, बेकारी सम्भवता इनको जन्म से प्राप्त होती है। रहन सहन का स्तर इतना निम्न होता है कि शरीर ढकने को न वस्त्र न पेट भरने के लिये अन्न होता है बीमारी में इलाज करने के लिये पैसे तक नहीं होता। छोटे और पिछड़े हुए गाँव में स्थायी बाजार तक नहीं होते। यहाँ सप्ताह में एक दिन बाजार लगता है जहाँ जीवन गुजारने के लिये कुछ चीजें मिल जाती हैं। सामाजिक स्तरीकरण यहाँ जाति के आधार पर पाया जाता।

③ सामाजिक विशेषताएँ।- ग्रामीण समाज में सरलता पायी जाती है। ग्रामीण समाज में भिन्नताएँ नहीं देखने को मिलती हैं। ग्रामीण समाजों में अनेक जनजातीय विश्वास व अन्धविश्वास जैसे जादू टोने टोटके चमत्कारों, पेड़ों की पूजा, पशुओं की बलि देना भूत प्रेतों से जुड़े हुए विश्वास आदि ग्रामीण सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। जाति व्यवस्था ग्रामीण समाजों में आज भी अपनी चरम सीमा में पाई जाती है। ग्रामीण समाजों में व्यक्ति की पहचान परिवार से होती है। ग्रामीण समाजों में परम्परागत सामाजिक संबंधों का ढाँचा पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

(i) सांस्कृतिक विशेषताएँ: ग्रामीण समाजों में आज भी लोक विश्वासों को देखते हैं या रचनात्मकों की परम्पराओं को देते हैं। यहाँ का धर्म प्राकृतिक वृक्षों की विभिन्न अथवा आचरण में समाहित होते हैं। ग्रामीण धर्म और उनके देवी देवता जीवन को धारा बताते हैं। और उनके साथ रीतियों और रूढ़ियों में बाँधे रखते हैं। उनके धर्म में जादू टोना, भूत प्रेत विधि विधान रूप में जुड़ा होता है। ग्रामीण सांस्कृतिक परिभाषा में अन्धविश्वासी परम्पराओं की एक शक्तिशाली श्रृंखला है जिससे व्यक्ति अन्जाने में जुड़ा हुआ है। यहाँ तर्क और विवेक का कोई स्थान नहीं है। ग्रामीण सांस्कृतिक विशेषताओं में ग्रामीण कलाओं विशेष स्थान है। जिसका सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है।

मनोरंजन से जुड़ी सांस्कृतिक वस्तुओं में नौटंकी, रामा, रसीया, बिरहा, बारह मासा आदि और वस्तुएं पाई जाती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ग्रामीण समाज आज भी अपनी मौलिक विशेषताओं के साथ जीवित है।

———x———